# बुढ़िया और कद्दू

बंगाली लोककथा

एक बूढ़ी औरत अपने दो कुत्तों, लालू और भालू के साथ रहती थी.
उसकी इकलौती बेटी दूर के एक गांव में रहती थी.

एक दिन उसने अपने कुत्तों से कहा, "देखो मैं अपनी बेटी के घर
जा रही हूँ. जब तक मैं वापस नहीं आऊं तब तक यहीं पर रहना."
फिर उसने अपना बैग पैक किया और सफर के लिए निकली.

वो जंगल में अभी ज्यादा दूर नहीं गई थी जब उसे एक लोमड़ी मिली. "बुढ़िया, बुढ़िया मैं तुम्हें खाना चाहती हूं," लोमड़ी उस पर घुर्राई.

"अरे लोमड़ी, एक सिकुड़ी, पतली बुढ़िया को खाकर तुम्हें क्या मिलेगा? जब मैं अपनी बेटी के यहाँ से वापस लौटूंगी तब तक मैं अच्छी तरह से मोटी हो जाऊंगी."

"बुढ़िया, बुढ़िया, जब तुम लौटोगी, तब मैं तुम्हें खाऊंगी," लोमड़ी ने कहा.

बुढ़िया ने अपना सफर जारी रखा. कुछ देर बाद उसे एक बाघ मिला.
"बुढ़िया, बुढ़िया मैं तुम्हें खाना चाहता हूं," बाघ घुर्राया.

"अरे बाघ, एक सिकुड़ी, पतली बुढ़िया को खाकर तुम्हें क्या मिलेगा? जब मैं अपनी बेटी के यहाँ से वापस लौटूंगी तब तक मैं अच्छी तरह से मोटी हो जाऊंगी."

"बुढ़िया, बुढ़िया, जब तुम लौटोगी, तब मैं तुम्हें खाऊंगा," बाघ ने कहा.

कुछ देर बाद बूढ़ी औरत को एक शेर मिला.

"बुढ़िया, बुढ़िया मैं तुम्हें खाना चाहता हूं," शेर दहाड़ा.

"अरे शेर, एक सिकुड़ी, पतली बुढ़िया को खाकर तुम्हें क्या मिलेगा? जब मैं अपनी बेटी के यहाँ से वापस लौटूंगी तब तक मैं अच्छी तरह से मोटी हो जाऊंगी."

"बुढ़िया, बुढ़िया, जब तुम लौटोगी, तब मैं तुम्हें खा जाऊंगा," शेर ने दहाड़ लगाई.

कुछ समय बाद बूढ़ी औरत अपनी बेटी के घर पहुंची.

"अरे बेटी, मेरी यात्रा काफी भयानक रही. पहले मैं एक लोमड़ी से मिली. फिर एक बाघ और एक शेर से. सभी मुझे खाना चाहते थे."

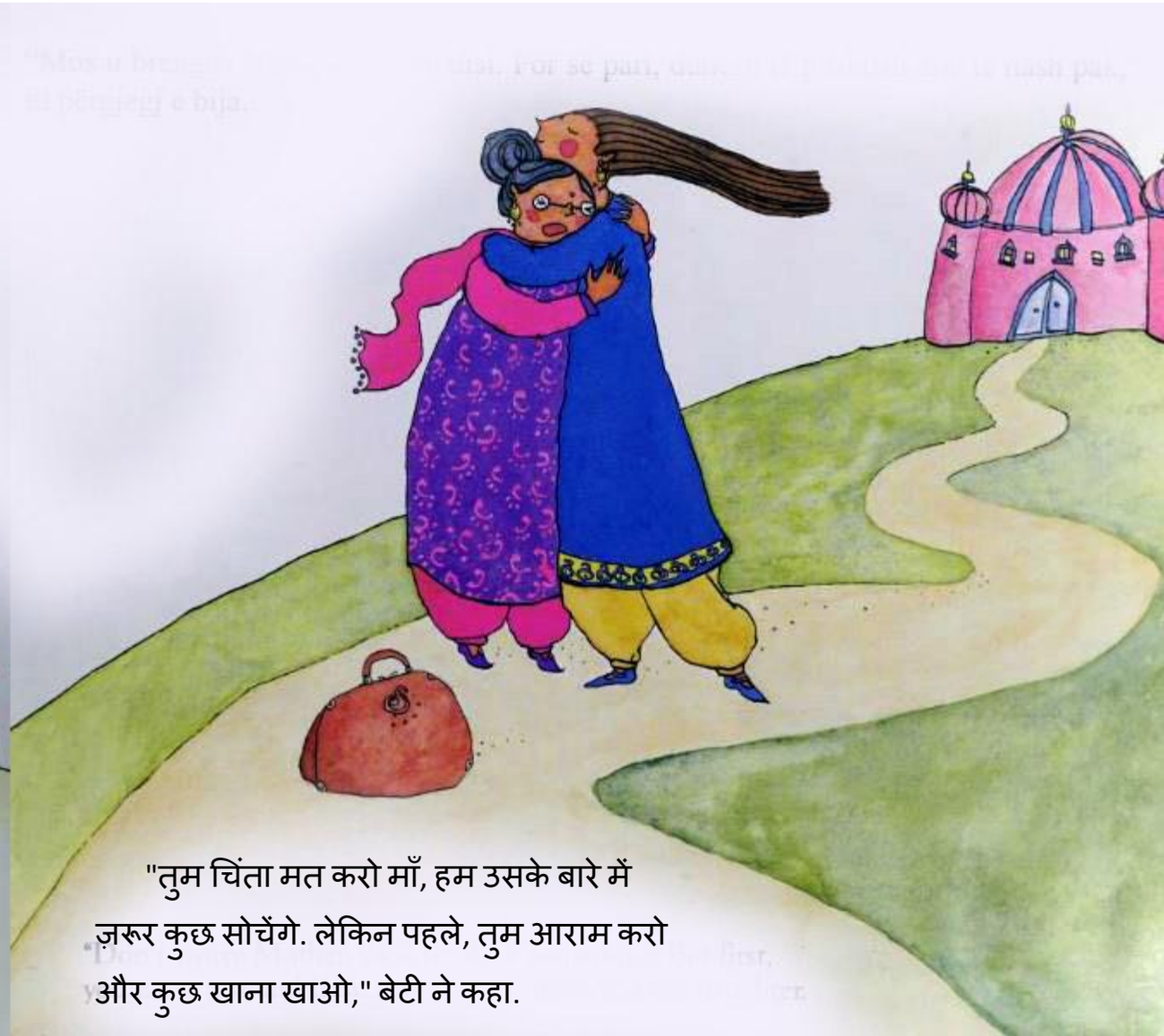

"तुम चिंता मत करो माँ, हम उसके बारे में ज़रूर कुछ सोचेंगे. लेकिन पहले, तुम आराम करो और कुछ खाना खाओ," बेटी ने कहा.

बुढ़िया अपनी बेटी के साथ तीन महीने रही. उस दौरान, उसने इतना बढ़िया खाना खाया कि वो अच्छी तरह मोटी और गोल-मटोल हो गई.

जब घर वापस जाने का समय हुआ, तो बुढ़िया ने अपनी बेटी से पूछा, "बताओ मैं क्या करूँ? जंगल में सभी जानवर मुझे खाने के लिए इंतजार कर रहे होंगे."

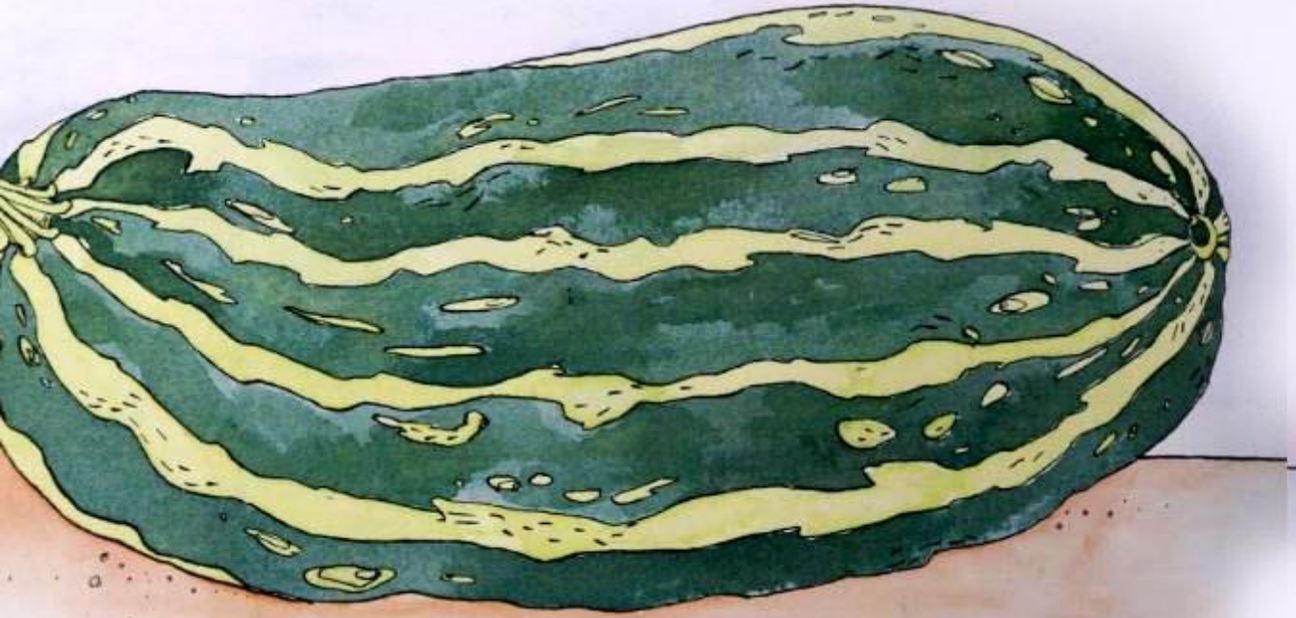

"देखो माँ, मेरे दिमाग में एक योजना है," बेटी को कहा, और फिर वो बगीचे में गई. वहाँ, उसने खेत में से सबसे बड़ा कद्दू तोड़ा. उसने कद्दू को ऊपर से काटा और उसे खोखला किया.

"माँ, तुम कद्दू में घुस जाओ. फिर मैं उसे धक्का दूंगी और फिर वो तुम्हें सीधा घर ले जाएगा. अलविदा माँ."

"अलविदा बेटी," बुढ़िया ने जवाब दिया. फिर वे एक द-सरे से गले मिले.

बेटी ने कद्दू को ऊपर से बंद कर दिया और फिर उसने उसे ज़ोर से एक धक्का दिया. जैसे-जैसे कद्दू लुढ़का, बुढ़िया ने एक गीत गाया:

"चल मेरे कद्दू ठुम्मक-ठम

घर पहुँच और फिर ले दम."

जब कद्दू शेर के पास पहुंचा, तो शेर ने दहाड़ते हुए कहा, "कद्दू तुम बड़े और रसीले हो, लेकिन मैं तो बुढ़िया का इंतजार कर रहा हूं." फिर शेर ने कद्दू को एक और धक्का दिया.

जैसे-जैसे कद्दू लुढ़का, बुढ़िया ने एक गीत गाया:

"चल मेरे कद्दू ठुम्मक-ठम

घर पहुँच और फिर ले दम."

जब कद्दू बाघ के पास पहुंचा, तो बाघ  ने दहाड़ते हुए कहा, "कद्दू तुम बड़े और रसीले हो, लेकिन मैं तो बुढ़िया का इंतजार कर रहा हूं." फिर बाघ ने कद्दू को एक और धक्का दिया.

जैसे-जैसे कद्दू लुढ़का, बुढ़िया ने एक गीत गाया:

''चल मेरे कद्दू ठुम्मक-ठम

घर पहुँच और फिर ले दम.”

लेकिन जब कद्दू लोमड़ी के पास पहुंचा, तो  लोमड़ी बुढ़िया की चाल को ताड़ गई.

"कद्दू तुम बड़े और रसीले हो, लेकिन मुझे पता है कि तुम्हारे अंदर बुढ़िया छिपी है."

फिर लोमड़ी कद्दू पर उछली और उसने उसके दो टुकड़े किए.
उसे अंदर बुढ़िया मिली.

"बुढ़िया, बुढ़िया, मैं अब तुम्हें खाने जा रही हूँ," लोमड़ी चिल्लाई.

"अरे लोमड़ी, तुम मुझे ज़रूर खाओ, पर उससे पहले मुझे अपना घर एक बार फिर से देखने दो," बुढ़िया ने हाथ जोड़कर विनती की.

"बुढ़िया, बुढ़िया, मैं तुम्हें घर ज़रूर देखने दूँगी," लोमड़ी ने कहा.

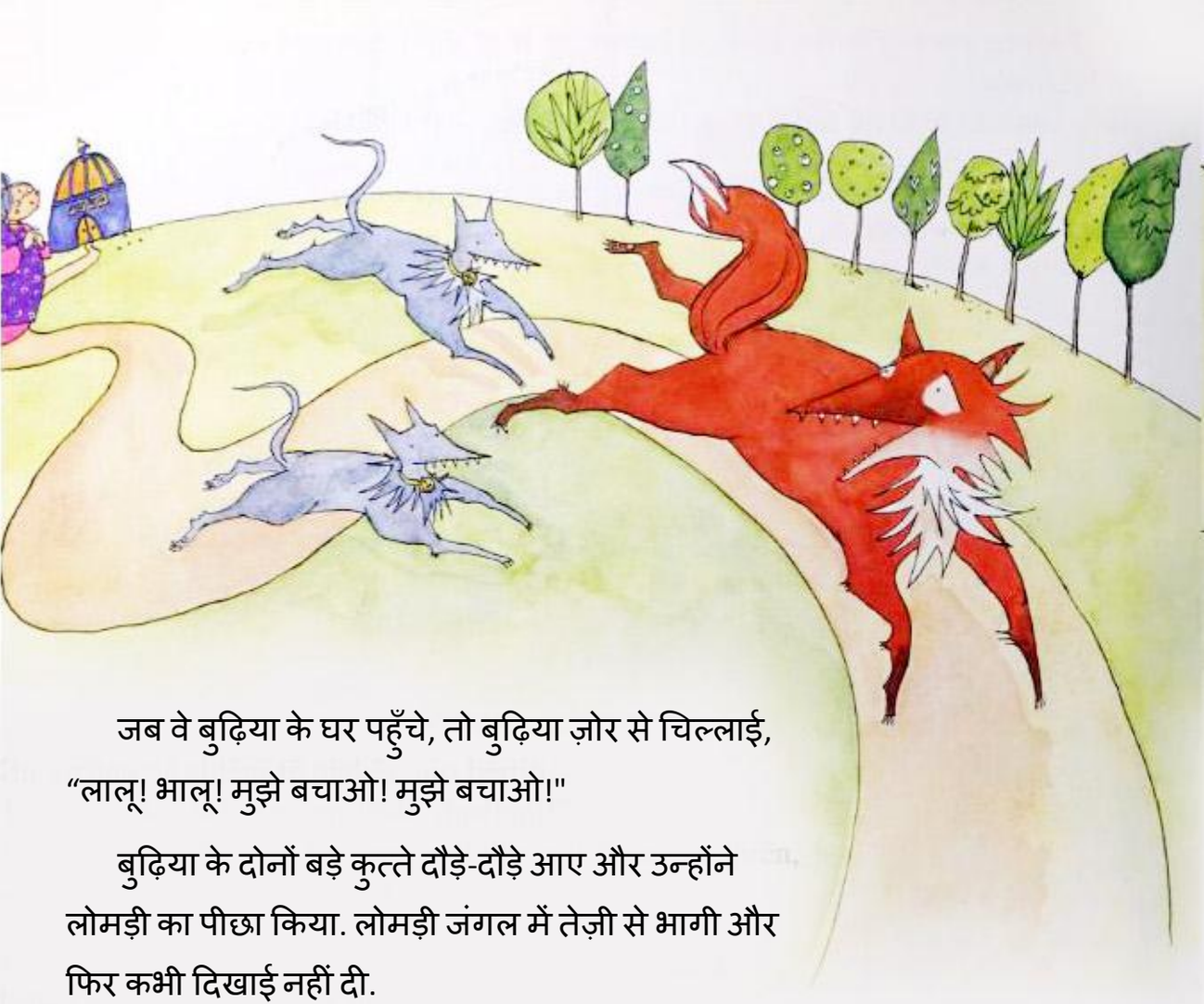

जब वे बुढ़िया के घर पहुँचे, तो बुढ़िया ज़ोर से चिल्लाई, “लालू! भालू! मुझे बचाओ! मुझे बचाओ!"

बुढ़िया के दोनों बड़े कुत्ते दौड़े-दौड़े आए और उन्होंने लोमड़ी का पीछा किया. लोमड़ी जंगल में तेज़ी से भागी और फिर कभी दिखाई नहीं दी.

जब अंत में लोमड़ी रुकी तो उसने कहा, "बुढ़िया, बुढ़िया तुम मुझसे ज़्यादा चालाक निकलीं. अब मेरे पास खाने के लिए सिर्फ कद्दू ही बचा है."

उसके बाद लोमड़ी ने बुढ़िया को दुबारा कभी परेशान नहीं किया.

अंत